अन्तिम पनसैया

(मैथिली कविता-संग्रह)

कामिनी

नवारम्भ
मधुबनी/पटना/दिल्ली

ऑनलाइन बुक स्टोर **www.navarambh.com** पर पुस्तक उपलब्ध।

ISBN : 000-00-00000-00-0

अन्तिम पनसैया
(मैथिली कविता-संग्रह)

© कामिनी

प्रथम संस्करण : 2025
मूल्य : 200 रु.

आवरण : साभार

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-5
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार- 847211
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
दिल्ली एनसीआर : प्लॉट एच. एस.-2, ब्लॉक एफ
सेक्टर-अल्फा-2, ग्रेटर नोएडा-201308
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Antim Pansaiya
A Collection Of Maithili Poems By **Kamini**
First Edition : 2025, Price : Rs 200/-

ई पोथी हम अपन गाम-घर
लोक-समाजकेँ
समर्पित करैत छियनि
जे हमरा एहि योग्य बनौलनि
कि आइ हम अहाँ सभक समक्ष
ठाढ़ होयबाक साहस जुटा रहल छी!

—कामिनी

अपन बात

हमरा लगैए कोनो पोथीक भूमिका ओकर रचने होइत अछि। खास कऽ केँ कविता-कथाक तऽ आरो। प्रत्येक कविता, प्रत्येक कथा अपना आपमे स्वतंत्र होइत अछि। एकटा कविता जहिना दोसर कविताक विषय-वस्तु नहि स्पष्ट कऽ सकैत अछि, तहिना एकटा कथा दोसर कथाक विषय-वस्तुसँ अनभिज्ञ रहैए। प्रत्येक कविता, प्रत्येक कथा अपना आपमे अपना लेल पूर्ण होइत अछि। ओकरा बगलबला कविता आ सामनेबला कथासँ कोनो सरोकार नहि रहैए। ओ आदिसँ अंत धरि अपन सूत्र अपनहि हाथमे थम्हने रहैए। गुण-दोष जे किछु हो, ओकर उत्तरदायित्व ओ अपने कान्ह पर उठेने रहैए। ओकरा कोनो अन्तर नहि पड़ैत छैक जे आगूक कथा, आगूक कविता कोन मोड़ लेत! ओ अपन आदि, मध्य आ अंत, अपने भारे-भरसबे तय करैत अछि।

हँ, ई अवश्य कहब जँ कोनो खास विषय पर सम्पूर्ण पोथी लिखल जाइत अछि तऽ ओकरा एकटा परिचयक बेगरता अवश्य पड़ैत छैक आ ई उचितो अछि। कारण से जँ परिचय नहि हो पोथीक आदिमे तऽ पाठक बुझि नहि पओता एकर विषयक राज। हुनको यैह हेतनि जे लेखकसँ कोनो त्रुटि भऽ गेलनि अछि जे एके विषय पर अनेक रंगक रचना पोथीमे संकलित कयल गेल अछि जखन कि ई बात सत्य नहि हैत। लेखक जानि-बुझिक एक विषय पर अनेक रचना कोनो खास उद्देश्यक दृष्टिएँ एक जगह संकलित कऽ ओकरा पोथीक आकार दैत छथि। से बात जँ पूर्वेमे भूमिका स्वरूप लेखक स्पष्ट कऽ देथि तऽ पाठककेँ विषय-वस्तु बुझबामे सहूलियत हेतनि। कही जे पाठक लेखकसँ आरो प्रभावित हेताह जे एकल विषय पर एतेक रास रचना हुनका एकहि जगह पर पढ़बाक लेल भेटि गेलनि, जे कि बड़ पैघ बात!

लेखक आ पाठकक बीच परिचयक काज करैत अछि भूमिका आ ई परिचय जँ लेखक स्वयं देथि तऽ आरो पाक-साफ होयत, अतिशयोक्तिक गुंजाइश नहि बाँचत। लेखककेँ ई डर हमेशा बनल रहत जे अपना विषयमे

अपने जँ हम बढ़ा-चढ़ाकऽ लिखब तऽ पाठकक समक्ष हास्यास्पद बात होयत। ई अपन संस्कृतियो रहल अछि जे अपना विषयमे अपने लोक प्रशंसा नहि करैत अछि। जहाँ तक भऽ सकैत छैक, संक्षिप्तमे लोक अपन बात रखैत अछि, अपन परिचय दैत अछि। तखन बिनु परिचयो नहि रहल जा सकैए। ई सामान्य व्यवहारो छी। लोककेँ लोक जँ परिचय नहि देत तऽ लोकक विषयमे लोक कोना बुझत! चाहे तऽ ई परिचय लेखक स्वयं देथि या दोसरेक माध्यमसँ दियाबथि। एकटा सामान्य जानकारीक लेल परिचयक होयब आवश्यक अछि।

पहिल पोथीकेँ छोड़ि तकर बादसँ जे पोथी हमर एखन धरि प्रकाशित भेल अछि ताहिमे नीक-बेजाय जे किछु, अपन बात हम अपनहि लिखने छी। ओकरा भूमिका कही वा परिचय, एके बात होयत दुनू।

कविता लिखबाक अलगसँ हमरा कोनो गुरुमंत्र नहि प्राप्त अछि, धरि हम कविता लिखैत छी। कही जे कविता लीखब हमर विवशता छी। जीवाक साधन छी। एतेक टाक जीवनमे आइ धरि कियो एहेन मित्र नहि भेटलाह जे हर मोड़ पर संग-साथ देने होथि, संग निमहेने होथि! मात्र एकटा कविते अछि जे हर स्थितिमे संग देलक, सहारा बनल। कखनो सोचैत छी तऽ लगैए जँ कविता नहि होइतय हमरा जीवनमे तऽ हम की करितहुँ? कोना जीवितहुँ? हमर जीवनक रूप-रेखा केहेन होइतय? शायद हम घुटि-घुटिक' मरि जइतहुँ! अरस्तु कहने छलाह— 'जो व्यक्ति समाज में रहना नहीं पसंद करता है, वह या तो देवता होगा या दानव।' हमरा लगैए समाजमे रहब मात्र सामाजिक प्राणी होयब नहि थिक। सामाजिक प्राणी लोक तखने बनैए जखन समाजक प्रति अपन जिम्मेवारी निमाहैए। ओकर सुख-दुःखमे संग-साथ दइए। हमर सहभागिता समाजक सुख-दुःखमे कवितेक माध्यमसँ होइत अछि। जँ हम सामाजिक प्राणी बनल छी तऽ ओ एकमात्र कवितेक सहयोगे, एकरे सत्प्रयासेँ। जँ कविता नहि होइतय हमरा जीवनमे तऽ हम ने सामाजिक प्राणी बनि पबितहुँ, ने जंगली जीव। कारण मनुखक बीच रहिक' पूर्णतया जंगलीयो प्राणी बनब सम्भव नहि आ सामाजिक प्राणी होयबाक लेल समाजक गुण-धर्मक निर्वाह करब परम आवश्यक आ ई सभ लोकरीति-नीतिक निर्वाह हम आइ धरि कवितेक माध्यमसँ करैत अयलहुँ अछि।

आगुओक लेल यैह इच्छा अछि जे कविताक संग-साथ बनल रहय जीवनमे, जाहिसँ जीवनक पार-घाट लागि सकय सहजतासँ। कविताक अलावा ने आइ कोनो इच्छा अछि, ने काल्हि कोनो इच्छा जागृत होयत, से हम जनैत छी। कविता बनल रहय, हमरा जीवनमे परम मित्रक भूमिका निमाहैत, आर की चाही हमरा! जहाँ तक भऽ सकत हम हुनक मान-दान करबनि। सेवा-सत्कारमे चूकबनि नहि, से वचन हम दैत छियनि। ताहिमे कोनो त्रुटि नहि हैत, एतेक विश्वास अछि हमरा। एक प्राण, दू देह बनल हम आ कविता, जीवनक निर्वाह कऽ ली, यैह बड़का बात होयत हमरा दुनूक लेल।

—कामिनी

कविता क्रम

11 : अपन धरती अपन लोक
13 : सुख-दुखक संगी
15 : धन्यवाद
17 : लेखा-जोखा
20 : पुनर्जन्म
22 : दुखहीन समाज
25 : सर्वधर्म समभाव
27 : विश्वकर्मा पूजा
30 : दृष्टिमे सृष्टि
33 : सर्वर डाउन
35 : महाभोज
37 : सुनहु भरत भावी प्रबल
40 : सामान्य लोकक सपना
42 : पात्रता परीक्षा
44 : सुख आ दुखक वर्षा
49 : प्रवासी पक्षी
52 : ऑनलाइन सम्बन्ध
54 : व्यथा
57 : माय
60 : ब्राह्मण भोजन
64 : छुतहर पर बज्रो नै खसै छै
66 : मनुखक बस्तीमे भेड़िया
68 : आपसी सौहार्द्रताक बेन
70 : सूप दुसलनि चालनिकेँ
72 : सपना
75 : सोंगर
77 : निर्दलीय
79 : दाग

81 : भाषा
83 : अमर्यादित भाषा
85 : भाषाक सम्बन्ध
87 : बुढ़बा मरबो नहि करैत छैक
90 : ओहो तऽ मनुखे छी
92 : नतमस्तक
95 : चम्बल घाटीक लुटेरा
98 : अद्‌भुत छटा
100 : आवश्यकता आ विलासिता
102 : दाता आ भोक्ता
106 : पात पर भात
109 : विश्वास
111 : शपथ
113 : पुरुषक बच्चा
116 : सींग
118 : लाज
120 : अपन गाम
123 : लैंडस्लाइड
126 : अन्तिम पनसैया

अपन धरती अपन लोक

भगवान! हमरा जतेक बेर
जन्म दियह
जतेक बेर
एहि मर्त्य-भुवनमे भेजियह
अपने धरती
अपने लोकक बीच

भगवान! हम नहि जन्म
लेबय चाहैत छी
सुन्दरसँ सुन्दर
दुनियाँक कोनो अन्य
धरती पर
हम एतहिये
एही धरती पर
जन्म लऽ पलय-बढ़य
चाहैत छी
जहिना एखन धरि
पलैत-बढ़ैत एलहुँ अछि

भगवान! हम गीता आ पुनीताकेँ छोड़ि
आलिया आ एलीशा संगे
नहि खेलाय चाहैत छी
कोनो तरहक खेल
हमरा तऽ अपने बड़की काकी
अपने छोटकी काकी
अपने छोटका काका

नीक लगैए

भगवान! हम दुनियाँक
स्वादिष्टसँ स्वादिष्ट भोजन
नहि करय चाहैत छी
हमरा तऽ अपने घरक मरुआ रोटी
अपने घरक नून-तेल
अपने घरक पानि
नीक लगैए

भगवान! हम मुक्ति
नहि मँगैत छियह
हमरा तऽ एहिये
जीवन-चक्रमे रखियह
आ बेर-बेर जन्म दियह
अपने धरती आ अपने
लोकक बीच
जतय हम
अपना बाड़ी महक
तिलकोर बनि
लतरि जाइ!

सुख-दुखक संगी

भगवान! कतबो कोनो
आन्ही-बिहाड़ि आबय कतहु
हिन्दू-मुस्लिम राइट करय कियो
हमरा गामक हवामे
नहि जहर घोरय दिहक हौ
एहिना रहय दिहक
अली अकबर
आ मनमोहन झाकेँ संगहि
एकहि गाममे
सुख-दुःख बँटैत
संग-साथ दैत

भगवान! भलेहि बिहारसँ
बंगाल अलग भऽ गेल हुअए
हमरा गामक बभनटोली
आ चमरटोलीक बीच
कोनो अलगाव
नहि आबय दिहक हौ
दुनू रहय
एकहि गाममे
एकहि संग
सुख-दुःख बँटैत
संग-साथ दैत

भगवान! मन्दिर आ मस्जिदक बीच
भलेहि भेल हुअए इतिहासमे

अनेक संघर्ष
हमरा गामक रामनवमी
आ मुहर्रमक बीच
कोनो दूरी
नहि आबय दिहक हौ
एहिना शकीना खातून
आ मीना देवीक बीच रहय
आपसी सौहार्द्र
दुनू रहय
एकहि गाममे
एकहि संग
सुख-दुःख बँटैत
संग-साथ दैत।

धन्यवाद

भगवान! जखन लोक
जमीन कीनैए
तखन तोरा धन्यवाद करैक लेल
अबैत हेतह
जखन लोक घर कीनैए
तखन तोरा धन्यवाद करैक लेल
अबैत हेतह
जखन लोक अजस्र
पाइ कमाइए
तखन तोरा धन्यवाद करैक लेल
अबैत हेतह
जखन लोकक धिया-पुताक
बियाह-द्विरागमन
मूड़न-उपनयन
होइत हेतैक
तखन तोरा धन्यवाद करैक लेल
अबैत हेतह
जखन लोकक
परिवारमे वृद्धि
होइत हेतैक
तखन तोरा धन्यवाद करैक लेल
अबैत हेतह
जखन लोकक
पूर भऽ जाइत हेतैक
सभ दृश्य-अदृश्य इच्छा
तखन तोरा धन्यवाद करैक लेल

अबैत हेतह

धरि हम अबैत छियह तखन
जखन हमर लेखनी
अनामति रहैए
नवका किताब छपैए
आ हमरा ओ सभ सुख भेटैए
जे उपरोक्त प्राप्त कयलाक बाद
लोककेँ भेटैत हेतैक

भगवान! हम सोना चानी
जमीन-जायदाद
किछु नहि मँगैत छियह
की करब ई सभ लऽ कऽ
सभटा तऽ विनष्टे होयत
हम तऽ सांसारिक सुखमे
एतबे मँगैत छियह
ई नवका किताबक सुख
हमरा देने रहियह हौ
आ हम अबैत रहियह
तोरा धन्यवाद करैक लेल एहिना
जहिना एखन एलियह अछि हौ!

लेखा-जोखा

भगवान! जखन हमर कर्मक
लेखा-जोखा करय बैसियह
तऽ कने सावधानीसँ करियह
हड़बड़ाकऽ किछुसँ किछु
नहि करिहक हौ
मानलियह तोरा लग
अरबो-खरबोसँ ऊपर
लोकक बही-खाता
जमा रहैत छह
देखबाक लेल
धरि तैयो कने धैर्य
रखियह अवश्य
हमरा लग अबैत-अबैत

भगवान! हम शुद्ध
सात्विक लोक
हिंसासँ हमरा
दूर-दूर तक
कोनो सम्बन्ध नहि
धरि तैयो
कएक-बेर
हमरा हाथसँ
भऽ जाइए
जीव हत्या
कखनो चलैत-फिरैत
पैर तर

आबि जाइए चुट्टी
कखनो मरि जाइए मच्छर
कखनो तव पर
खसि पड़ैए फतिंगा
लोहियेमे चलि जाइए कीड़ा
आ पूजो-पाठ करैत
धूपो-आरती दैत
जीव हत्याक संभावना
बनले रहैए

भगवान! हम जानि-बुझिकऽ
ककरो अवघात
नहि कऽ सकैत छी किन्नहुँ
धरि तैयो प्रतिरक्षामे
उठबय पड़ैए हथियार
करय पड़ैए संहार
एहिमे हमर
कोनो दोष नहि
जँ दुश्मनकेँ
हम नहि मारब
तऽ ओ हमरा मारि देत

भगवान! चोरी-चपारीसँ
हमरा कोनो लेना-देना नहि
हमरा जँ सोनोक ढेरी लग
बैसा देबह तऽ
हम एक चौअन्नी नहि छूब
से तूँ अपनो जनैत हेबहक
धरि घरमे शांति बनल रहय
समाजमे कोनो अव्यवस्था

नहि पसरय
देश अपना गतिये
चलैत रहय
अरोसी-पड़ोसीकेँ
हमरासँ कोनो
दुःख नहि पहुँचनि
धिया-पुता आनन्दित रहय
ताहि लेल बाजय पड़ैए
कखनो-कखनो झूठ
जकरा नजरिअंदाज
कऽ कऽ चलियह हौ

भगवान! हम अपन
मन-कर्म आ वचनसँ
चाहैत तऽ छी
तोरे ध्यान करियह
तोरे बनिकऽ रहियह
धरि से भऽ नहि पबैए
कखनो घर
कखनो परक चिंता
गरोसनहि रहैए
एनामे चाहियोकऽ
हम पूर्ण रूपेँ
तोरा लेल समर्पित
नहि भऽ पबैत छी
एहिमे हमर
कोनो दोष नहि हौ!

पुनर्जन्म

भगवान! जँ हमरा पुनर्जन्म
देबे करबह तऽ दियह
धरि ने ब्राह्मण बनबियह
ने क्षत्रिय
ने वैश्य
ने शूद्र
हमरा मात्र
मनुख बनबियह

हम ब्राह्मण बनि
ने दोसरसँ अपनाकेँ
श्रेष्ठ बुझय चाहैत छी
ने क्षत्रिय बनि
दोसर पर शासन
करय चाहैत छी
ने वैश्य बनि
करय चाहैत छी
मानवीय मूल्यक व्यापार
आ ने शूद्र बनि
सहय चाहैत छी
लोकक दुत्कार

भगवान! हमरा जखन
पुनर्जन्म देबह तऽ
ई अवश्य रखियह ध्यान
हम कोनो जाति विशेषक पाँतिमे

नहि रही ठाढ़
हम मात्र मनुख बनी
आ मनुखे बनल
चलि जाइ एहि दुनियाँसँ
नहि लागय
हमरा चरित्र पर
कोनो दाग
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्रक।

दुखहीन समाज

भगवान! अगिला बेर
हमरा जन्म दियह जँ
तऽ दुःखहीन समाजक बीच
हमरा नहि देखल जाइए
लोकक दुःख
हमरासँ नहि सहल जाइए
लोकक वेदना
हम आँखि-कान मूनिकऽ
विभत्स त्रासदीपूर्ण
सभ घटना-दुर्घटनाकेँ
सहज भऽ सहन
नहि कऽ सकैत छी

भगवान! सत् पूछह तऽ
आब हमहुँ
लिच्छवीक राजकुमार जकाँ
वैराग्य ग्रहण करय चाहैत छी
एहि जीवनसँ
हम दुःख देखिकऽ
शोक देखिकऽ
पीड़ा देखिकऽ
सभ किछु
अपना आँखिक सोझाँ
बोहाइत देखिकऽ
थाकि गेल छी
वितृष्णासँ

भरि गेल अछि
हमर मोन

भगवान! पहिने हमरा
लगैत छल
जीवनसँ पैघ
मुक्तियो नहि
धरि आब लगैए
मुक्तिये श्रेष्ठ जीवनसँ
जतय नहि दुःख अछि
नहि पीड़ा
नहि अपना आँखिक सोझाँ
अपन स्वजनसँ
बिछुड़बाक दण्ड
जँ सुख नहि अछि
तऽ दुःखो तऽ
नहिये अछि ने

भगवान! एतेक कमजोर
हृदय दऽ कऽ
मनुख हमरा
बेकारे बनेलह
जे बेर-बेर घाहिल
होइत अछि
मुरुछिक' खसैत अछि
जखन देखैए ककरो
असमय मरैत
अथाह कष्ट भोगैत
तहन पले-पले
छीजय लगैए

इहो तन-मन
जकरामे उठैत छैक
बेसम्हार भेल
समुद्रक लहरि
जे सभ किछु
लील लेबा पर
आतुर रहैए!

सर्वधर्म समभाव

कखनो काल
रामकेँ सुमरि लैत छियनि
कखनो काल
हनुमान मोन पड़ैत छथि
कखनो काल
शंकरकेँ सुमरि लैत छियनि
कखनो काल
विष्णु-विष्णु करैत छी
कखनो काल
श्री कृष्णकेँ सुमरि लैत छियनि
कखनो काल
राधा मोन पड़ैत छथि
सभक प्रति
मोनमे श्रद्धा-विश्वास अछि

तहिना कखनो
चर्च लग माथ झुका लैत छी
तऽ कखनो गुरुद्वारा लग
मस्जिद लग अबितहिं
श्रद्धा भावसँ
भरि जाइत अछि मोन
सिख-इसाइ-मुसलमान
बसैत अछि हमरा चारूकात
हम होलियोक मलपुआ खाइत छी
क्रिसमसक केक सेहो
रमजानमे जखन सुनैत छी

अल्लाह हो अकबर तऽ
अपने आप उच्चारित होमय लगैत अछि हृदयसँ
अल्लाह हो अकबर

हम सनातनी छी
हम सर्वधर्म समभावमे
आस्था रखैत छी
हम अपनो जीबय चाहैत छी
हम दोसरोकेँ जीवित
देखय चाहैत छी
हमरा लेल धर्मक अर्थ अछि
सुख-समृद्धि-शांति
हमर धर्म छी– मानव कल्याण।

विश्वकर्मा पूजा

आइ भोरे-भोर
लगाकऽ चारि बेर
घंटी बाजल
सूतल रही तखने
धड़फड़ायले उठलहुँ
भेल कचड़ाबला हैत
कचड़ा लऽ ठाढ़
ओना विश्वास
नहि होइत छल
एतेक भोरे ओ आयत
ओ तऽ दू बजै छै दिन
तखन अबैए
कएक दिन तऽ
एबो नहि करैए
कहैए– 'मैडम, छुट्टी का जरूरी
हमको भी होता है'
कहे छियै ले
जतेक छुट्टी लेबाक छौक
ओना हम छुट्टी
नहि देबै तऽ
मानत ओ थोड़े
काजे छोड़ि भागत
कतेककेँ तकैत रहू
जो जे करबें से कर

से भोरे-भोर

जे घंटी बाजल
ओ कचड़ाबला तऽ
नहिये रहय
ओ रहय
फूलवाली
कहय लागल
—'मैडम माला ले लू
आज विश्वकर्मा पूजा है'
कहलियै— 'दाइ
हम माला ककरा लऽ लेब
हमरा तऽ कोनो वाहने
नहि अछि
वाहनक नाम पर अछि
बीझ लागल
एकटा पुरना साइकिल
बच्चाबला
जकरा बच्चा सभ
बच्चामे चलबैत रहय
आब ओ साइकिल
पड़ल अछि
गाड़ीक जगह पर
जे चलबै जोग
तऽ नहिये अछि
बेचबो करब तऽ
सए रुपैयासँ बेसी
कबाड़ीबला नहि देत

धरि तैयो
कोनो दुःख नहि अछि हमरा
हमरा दऽ दुःख होइतय तखन

जखन देह झँपला जोग
वस्त्र नहि होइतय
पेट भरबा जोग
अन्न नहि होइतय
माथ पर अपना घरक
छाहरि नहि रहितय
हाथमे कॉपी-किताब
नहि होइतय
नहि होइतय
मनक अभिव्यक्तिक
कोनो साधन
से जँ अछिये सभटा
तऽ दुःख कोन बातक!

दृष्टिमे सृष्टि

कखनो ध्यानसँ
अहाँ देखबै तऽ लागत
पूब दिशामे सूर्य
पहिल बेर उगल अछि
लाल-लाल ओकर आभा
पहिल बेर चारूकात
पसरल अछि
पंक्तिबद्ध चिड़ै-चुनमुनीक झुंड
पहिल बेर आकाशमे
पंख पसारलक अछि
पहिल बेर ओकर कलरव
अहाँ सुनलहुँ अछि
पहिल बेर सिहकल अछि
पुरबा-पछबा बसात
पहिल बेर फुलायल अछि
रंगबिरहा फूल
पहिल बेर अहाँक साँसमे
आबि रहल अछि
दूर कतहुसँ आमक मोजरक सुगन्धि
पहिल बेर सुनि रहल छी
अहाँ कोइलीक बाजब

कखनो ध्यानसँ
अहाँ देखबै तऽ लागत
सभ किछु
नव-नव
जेना पहिल बेर

पहिल दृष्टिमे सृष्टि
अहाँ देखने होइ
आ आश्चर्यचकित अचम्भित
भेल होइ
की आँखिकेँ एतेक सुख
अनायासे कोना भेटि गेल
एतेक सुन्दर
एतेक सुखद दृश्यसँ आइ धरि
अहाँ वंचित कोना भेल रही

कखनो ध्यानसँ
अहाँ देखबै तऽ लागत
जीवनमे सभ किछु
नव-नव
जेना जीवन जीनाइ अहाँ
एखने-एखने शुरूए कयने होइ
आ नव-नव
हाथ-पैरबला
नवका बच्चा सन
चलबामे
किछु पकड़बामे
किछु बजबामे
आनन्द आबि रहल हो
आनन्द आबि रहल हो
उठबामे आ खसबामे
सखा-सम्बन्धीक उपस्थिति
अभेद्य सुरक्षा कवच सन
अहाँकेँ सुरक्षित रखने हो

कखनो-कखनो जीवनमे

सभ किछु नव लगैए
पुरान रहलाक बादो
ध्यानसँ अहाँ देखबै तऽ!

सर्वर डाउन

जीवनमे सर्वर डाउन
होइत छैक तखन
जखन भाव तऽ
हुअ अहाँ लग
भाषा नहि
अभिव्यक्तिक कोनो अन्य
माध्यम नहि
अहाँ औनाइत रही
छटपटाइत रही
धरि हृदयसँ भाव
कोनो विधिये बाहर
नहि आबि पाबय

जीवनमे सर्वर डाउन
होइत छैक तखन
जखन आगूमे
छप्पन भोग राखल रहय
आ अहाँ ओकरा
नहि खयबाक लेल
विवश रही
मात्र देखैत रही
ओहि दिस
निरीह भावेँ
टुकुर-टुकुर, टुकुर-टुकुर

जीवनमे सर्वर डाउन

होइत छैक तखन
जखन घर-परिवारमे
अनेको सखा-सम्बन्धी रहय
आ अहाँक
हाल नहि पूछय कियो
अहाँक बात नहि बूझय कियो
अहाँ उपेक्षित प्राणी जकाँ
पड़ल रही
घरक कोनो कोनमे
जकरा भेला
नहि भेलासँ
अन्तर नहि पड़य ककरो

जीवनमे सर्वर डाउन
होइत छैक तखन
जखन सामाजिक-आर्थिक
आ राजनीतिक दृष्टिएँ
अहाँ हीन बुझी
अपनाकेँ
आ विरोधक स्वर
पलैत हुअए अहाँमे
धरि विरोध करबाक लेल
नहि शब्द भेटय
नहि सामर्थ्य
अहाँ भीतरे-भीतर
घुटैत रही
कूही होइत रही
धरि ककरो कोनो
फर्क नहि पड़य कतहु!

महाभोज

मन्नू भंडारी जी
आइ जँ अहाँ
रहितहुँ जीबैत
तऽ अपन महाभोजक कथाक्रम
बदलय पड़ितय
एतय सवर्ण बनाम दलित नहि
दलित बनाम महादलितक
मसला अछि
जतय एक-दोसराक
अवनतिमे उन्नति
देखैछ ओ

आइ महादलितक घरमे
दलित आगि लगबैए
आ दूर ठाढ़ भऽ ओ
तमाशा देखैए
बकड़ी जरैत
गाय-महींस
खुट्टा पर बान्हल
अपन जीवन बचबै लेल
आफन तोड़ैत
धिया-पुता
बूढ़-बुढ़ानुस
आगिक लपेटिमे झुलसैत
दू सेर गहूँम
दू सेर चाउर

दू सेर मोसरी-खेसारी
जे बड़ मेहनतिसँ
जुटायल गेल छलै
पेटक आगि
मिझेबाक लेल
से आगिमे अपने
समिधा बनल
स्वाहा होइछ

मन्नू भंडारी जी
आइ पुनः आयोजित
भऽ रहल अछि महाभोज
नेता-विजेता
मंत्री-संतरी
जाहिमे सभ
शामिल हेताह
आ कचड़िकऽ खेताह
अपना इच्छे
भावना-संवेदनाकेँ
मीडियाबला
लाइव प्रसारण करत
जनता विरोध करत तऽ
कते काल
ओकरो तऽ अपन जीवन छैक
घर-परिवार छैक
डर तऽ बनले रहैत छैक
सभकेँ सभसँ!

सुनहु भरत भावी प्रबल

जीवनमे कखन
कोन चीज घटित भऽ जायत
से कियो नहि
कहि सकैए
कखन कोन मोड़ पर
केहेन परिस्थितिक सामना
करय पड़त
से कियो नहि
कहि सकैए
कखनो-कखनो तऽ
परिस्थिति एना मोड़ लइए
की सभ किछु भऽ जाइए स्वाहा
सोचबा आ करबाक लेल
कहाँ किछु बँचैए तखन

देखियौ जे एखने
हवामे उड़ै वाली माछी
जे अन्नक लोभमे
अन्न धरि आयल
आ ओहिये अन्नक भीतर
दफन भऽ गेल
रोटी बेलैत
आ रोटी रखैत
हमर ध्यान जखन
रोटीक तर गेल
तऽ देखलहुँ

गरम रोटीक भीतर दबल
एकटा माछीकेँ
हमरा अपनो आश्चर्य लागल
ई घटना कखन
आ कोना घटित भेल

ई पाँखि वाली माछी
जे भिन-भिन कयने घुरै छल
एम्हरसँ ओम्हर
जकरा लाख प्रयासेँ
घरसँ बेदखल
नहि कऽ सकलहुँ हम
से एहि तरहेँ
एकटा रोटीक तरमे दबिक·
मरि गेल
दुःख तऽ हमरा
बड़ भेल
भलेहि कियो हमरा
कतबहु दुःख दिय
तेँ हम ओकर जीवन
नहि चाहब
से नहि भऽ सकैए
हमरासँ

धरि आब नहि किछु
कयल जा सकैए
'पिंजड़ा तोड़ि कऽ पंछी उड़ि गयो
हंसा रहे अकेला'
मरल माछीकेँ देखि
मोन पड़ि गेल

रामचरित मानसक
ई पाँति
जे पिता हरदम सुनाबथि
''सुनहु भरत भावी प्रबल
विलखि कहैए मुनिनाथ
हानि-लाभ जीवन मरण
यश-अपयश विधि हाथ।

सामान्य लोकक सपना

सामान्य लोकक
सपने केहेन होइत अछि
अपने बाड़ी महक
करैला सन
कने तीत
अपने गाछीक आम सन
कने मीठ
ने ततेक
तीत होइत अछि
जे खा नहि सकी
ने ततेक मीठ होइत अछि
जे पचाय नहि सकी

सामान्य लोकक
सपने केहेन होइत अछि
अपने घरक
नोन-तीमन सन
कने सुपाच्य
कने कुपाच्य
पेट भरि गेल तऽ
अगड़ाइत छी
पेट नहि भरल तऽ
औनाइत छी

सामान्य लोकक
सपने केहेन होइत अछि

अपने घरक छाहरि सन
कने शीतल
कने रौदियाह
कने चिंताक भारसँ दबल
कने नृत्य-कृत्यसँ आह्लादित
कखनो सोहर-खेलौना सन
कखनो समदाउन-उदासी सन!

पात्रता परीक्षा

जँ पात्रता परीक्षा होइतय
कोनो कंपीटिशन जकाँ मनुखक
मनुखक मानक पर
ठाढ़ होयबाक लेल
तऽ फिफ्टीयो परशेंट
पास करितय वा नहि
ताहिमे आशंका अछि हमरा
ग्रेसो मार्क्स देलाक बाद
कतेको मानक पायदानसँ
होइतय बाहर

सूट-बूटमे बाबू-भैया
पाग-दोपटामे
बाबा-काका
बनारसी सिल्कमे भौजी
ऊपरे-ऊपर
जतेक रांगल-ढोरल
भेटतीह/भेटताह
जरूरी नहि
भीतरो ओतबे
स्वच्छ भेटत

कखनो-कखनो तऽ
बाहरी चिक-चाक्य पर
भीतरी कारी
एतेक पड़ि जाइए भारी

की सभ सूट-बूट
सभ पाग-दोपटा
सभ सिल्क बनारसी
झँपैमे पड़ि जाइए कम
जखन होबय लगैए
चरित्र-चित्रण!

सुख आ दुःखक वर्षा

पहिने बड़ वर्षा होइ गाममे
गाम की जे शहरोमे होइते हेतै
धरि शहरक हाल हम
नहि कहब
हम तऽ गामक हाल कहब
किसानक बेटी जे रही
खेतीयेसँ चलय घर-परिवार
खेतीये पर निर्भर रहय जीवन
ताहि दिन गामे रही
शहर तऽ तखन देखलहुँ
जखन चेतनगर भेलहुँ
आ माय-मैंया संगे
देवघर गेलहुँ
पहिल बेर ट्रेन पर चढ़लहुँ
आ झूलैत-झूलैत
पहुँचलहुँ बाबाधाम
बाबाक जल चढ़ेबाक
जतबहि खुशी रहय
ततबहि शहरो देखबाक आनन्द

से जे कहय लगलहुँ
वर्षाक हाल
से ततेक वर्षा होइ गाममे
की नदी-नाला तऽ उछलिये जाइ
इनारो नाको-नाक भरि आबय
बाबा अपने खुनेने रहथि इनार

आ टोल भरिक लोक
ओहिमे पानि भरय
पानि भरय तऽ नीक बात
बाबा इनारो तऽ खुनेने रहथिन
लोकेक लेल ने
धरि लोको बड़ अपकर्मी
साफ नहि रहय दैक
इनारक थड़ि
ओतहि दातमनि कऽ कऽ
ओतहि कुच्ची फेकय
ओतहि बर्तन माँजिकऽ
ओतहि ऐंठि-कुठि फेकय
ओ तऽ जे से
वर्षाक पानि जे भरि आबय
ऊपर तक
ताहिसँ नहेबो करय
आ ओहियेमे
साड़ियो पखारि लैक
हमरा तऽ बड़ खराब लागय
वैह पानि लोक पीबो करय

वर्षा जे होमय लागय तऽ
सताहि लाधि दैक
लोक त्राहि-त्राहि करय
'हे! भगवान गरूसँ ऊबारू
उग्रास करू'
आ जखन जोर-जोरसँ
गर्जय लगय मेघ
तऽ मैंयाँ कहथिन— साहोर-साहोर
हम तऽ नेना रही

नहि बुझिये एकर अर्थ
एहिसँ बिजलीक सम्बन्ध
धरि तैयो पाछू-पाछू
हमहुँ कही साहोर-साहोर

रातिकेँ अक्सरहाँ
खसय लोकक घर धुस-धुस
आ चित्कार कऽ उठय लोक
जकर खसय से तऽ करबे करय
जकर नहियो खसय
सेहो डरल-सहमल रहय
तकर कारणो रहय
आइ-काल्हि जकाँ
नहि रहय लोकक
पक्का मकान
ककरो भीतघर तऽ
ककरो टटघर रहय
जे अत्यधिक वर्षाक कारणेँ
भसकि-भसकि खसय
ढहय-ढनमनाय

बाड़ी-झाड़ीमे ढोइसा बेंगो
बड़ रहय ताहि दिन
एम्हर मेघ गर्जन करय
ओम्हर ढोइसा बेंगक कैं-कों-कैं-कों
ताहूसँ ऊपर
बेसी भयावह
कमला-कोसीक उद्‌वेग
एम्हर मेघ कहय
आइ छोड़ि काल्हि नहि बरसब

ओम्हर बाढ़िक ढोलहो
छाती धक्-धक् करय लोकक
आब टूटल बान्ह
की तब टूटल बान्ह
कएक बेर तऽ
टुटियो जाय
आ बाढ़िक वेगमे
भसिया जाय लोकक घर
किरानीजी मास्टर साहेबक घर
एक बेर एहने बाढ़िमे
दहाय गेल रहनि
आ चारि मास धरि
गुजर करय पड़लनि स्कूलमे
मास्टर साहेब तऽ अपनहुँ
एक बेर भोमरा दने
बहिये गेल रहथि
ओ तऽ भगवान औरदा देने रहनि
जे बाँचि गेलाह

बाढ़िक कारणे
सभ बेर रोपल खेत
दहाय जाय
आ पिता मौन भऽ जाथि
हुनका करबा लेल
कोनो काजे नहि बाँचय
धानक ई हाल हुअ
कि लवानो लेल धान
तकने नहि भेटय लोककेँ
ओ पुरना अन्न रहय बाँचल
जाहिसँ चलय पेट

कोठी-भरलीकेँ सेहो वर्षा मे
बचाकऽ राखब
बड़ कठिन होइक
खढ़क घर
तेज वर्षाक कारणेँ
टप्-टप्-टप्-टप् चूबय लागय
कएक जगह तऽ माय
मटकूड़ी लगा दैक
कएक जगह बाल्टीनो
लगबय पड़ैक
तैयो खिच-खिच
भऽ जाइ घर
सुखल जमीन
सुखल नुआ-वस्त्र लेल
तरसय लोक
पहिने एतेक वर्षा होइक!

प्रवासी पक्षी

सुनैत छी
किछु प्रवासी पक्षी
होइत अछि
जे अनुकूल समयक
आनन्द उठेबाक लेल
परिवर्तित समयमे
करैत अछि प्रवास
दोसर देश
दोसरक धरती पर
आ समय परिवर्तित होइतहिं
पुनः घुरि अबैत अछि
अपना देश
अपन धरती पर

ई कोनो बेजाइओ बात नहि
जीवन होइते अछि
दुनियाँ देखबाक लेल
ओतय घुमि-फिरि
ओकर आनन्द उठेबाक लेल
जँ समय रहिते
समयक सदुपयोग
अहाँ नहि करब
तऽ समय अहाँक हाथसँ
निकलि जायत
आ अहाँ किछु नहि कऽ सकब
मात्र पछतावाक सिवा

किछु नहि रहत अहाँक हाथमे

तहिना प्रवासी पक्षी सन
किछु लोको होइत अछि प्रवासी
काज-धंधा लेल
दोसर देश जाइत अछि
अपन श्रम आ सोच
ओकरे लेल खपबैत अछि
इहो कोनो बेजाय बात नहि
'वसुधैव कुटुम्बकम्'
सम्पूर्ण धरतीये
अपन परिवार सन अछि
ओतय रहब
ओकर देखभाल करब
कोनो अनैतिक काज नहि

धरि अनैतिक काज
होइत अछि तखन
जखन अपना जन्मभूमि
आ अपना जन्मदाता लेल
नहि रहि जाइत अछि
लोकक हृदयमे कर्तव्यक
कोनो भाव
संवेदनाक लेल
कोनो स्थान
तहन धरती आ ओ कोखि
अवश्य कनैत अछि
एहन संवेदनाहीन
अपन सन्तानक जन्म पर

मनलहुँ दुनियाँ बड़ सुन्दर अछि
धरि अपन धरती, अपन लोकसँ नीक
कोनो आन धरती, कोनो आन लोक
कोना भऽ सकैए
रक्त-सम्बन्धी, रक्त-सम्बन्धक स्थान
कोनो कृत्रिम सुख-सुविधा
कोना लऽ सकैए
जहिना अपन लोकक स्पर्शो
एक सए दवाइसँ बेसी कारगर होइए
तहिना अपन लोकक प्रेम
ओकर संग-साथ
प्रवासक अनेको सुख-सुविधा पर
पड़ैए भारी!

ऑनलाइन सम्बन्ध

सत पूछी तऽ
आइ-काल्हिक जे हाल अछि
मनुखसँ मनुखक सम्बन्ध
तऽ कोनो नीक नहि
कहि सकैत छी हम
सखा-सम्बन्धी तऽ
दूरे बसैत छथि
जे अड़ोसियो-पड़ोसियोक हाल
ठीक-ठीक
कहाँ पता चलैत छैक लोककेँ
दू डेगक दूरी
दू सीमाक काज करैत अछि
हम पैघ तऽ हम पैघ
आ ई पैघत्वक देवाल
ततेक ने ऊँच भऽ जाइए
कि छोट होइमे देरी लगैए
कखनो-कखनो तऽ
एतेक देरी भऽ जाइए
कि जीवने नहि बँचैए शेष
तहन सम्बन्ध की बाँचत

ई जे ईर्ष्या अछि ने
ओ अपनो लोककेँ अपना
कहाँ रहय देलक
हर बातमे विवाद
आ ई विवाद

एतेक ने बढ़ि जाइए
कि सम्बन्ध समाप्त भऽ जाइए
तहन बात की हैत

तहन रहल बातक बात
से बात आइ-काल्हि
ऑनलाइने भऽ जाइए
अहाँक पोस्ट देखिकऽ
अहाँक टिप्पणी देखिकऽ
अहाँकेँ ऑनलाइन देखिकऽ
एतेक तऽ पता
चलिये जाइत छैक लोककेँ
सभ कुशल-मंगल अछि
नहि भीतरी
बाहरीयो बातक
हवा-पानि तऽ
बुझिये जाइए लोक
आ एतबो काफी छैक
जीबाक लेल
सखा-सम्बन्धीक
हाल-चाल बुझबाक लेल!

व्यथा

बूढ़ी टुकुर-टुकुर तकैत छथिन
पछबरिया दुआरि परसँ
पुबरिया दुआरि दिस
चुल्ही पर चाउर
खदबदा रहल छैक तसलीमे
कनी कालक बाद
माँड़ पसतै आ भात
भऽ जेतै तैयार
दालि-तरकारी
पहिनेसँ तैयार छैक
हींगक सुगन्धि
एखनो नाकसँ
गेलनि कहाँ
अल्लू-कोबीक तरकारी
हुनको बड़ नीक लगैत छनि
नवारीमे एहिये हाथसँ
कतेक ने बनाकऽ खुएने छथि
घरसँ पर तकक लोककेँ
मुदा आब ओ पैरुख
कहाँ रहलनि
आब तऽ चलितो छथि तऽ
देह पताइत छनि

मुदा नीक लगने की हेतनि
सभ दिन दू मुट्ठी चाउरो तऽ सिझेनाइ
कठिन लगैत छनि

एकटा पेटक लेल
दिन बनबैत छथि
तऽ राति धरि
जोगाकऽ रखैत छथि
अरुआइ-बसियाइ
जे होइ
केहनो गर्मी रहय
केहनो जाड़ रहय
वैह बसिया-खोसिया
पड़ैत छनि थारीमे
परैत की जे
परोसैत छथि अपने
अस्सी पार जर्जर भेल
एहि हाथेँ
अपना लेल
कहियो तऽ चूड़े खाकऽ
मुढ़िये फाँकिकऽ
खा लैत छथि
शूगर-बी.पी.क दवाइ
की करती
दवाइ नहि खेतीह
तऽ नहि जीतीह
ओना जीबाक इच्छा
आब कहाँ छनि शेष

मुदा तैयो जीवैत छथि
आब सगर जनम बीताकऽ
एहि चौथापनमे
आत्महत्या करतीह
कोना करतीह आत्महत्या

भागवतमे सुनने रहथि
आत्म हत्या जे करैत अछि
तकर आत्मा छिछियाइत रहैत छैक
एम्हर-ओम्हर
ई लोक तऽ नहिये सुधरलनि
आब दोसरे लोकमे
छिछियेबे करतीह
से मोन नहि मानैत छनि
बूढ़ी राधा-कृष्ण, राधा-कृष्ण
कऽ उठैत छथि

कनिये कालक बाद
परोसल जेतै
चारिटा थारीमे
भात-दालि-तरकारी
धरि ओहिमे
हुनकर थारी
नहि हेतनि शामिल
ओ थारी हैत
बेटा-पुतोहु नाति-नातिनक
बूढ़ीक भानस करबा
आ थारी भरबासँ
साफ मना कऽ देने छनि पुतोहु
बेटा परबस छनि
की करतीह
सभ दिन घरमे
एकटा हुनका पेटक खातिर
कलह हो
सेहो तऽ नीक
नहि लगैत छनि हुनका!

माय

उपेक्षित अनाथ भेल
मरल पड़ल अछि
बगराक बच्चा
एपार्टमेन्टक निच्चाँमे
आ दूर ठाढ़
ओकर माय
देखि रहल अछि ओकरा
मोह-विछोहक दृष्टिएँ

हमर हृदय विदीर्ण भऽ रहल अछि
ओकरा एहि तरहेँ
मरल पड़ल देखि
काल्हि सँझुके तऽ बात छी
जखन ओकरा देखने रहियै
मूड़ी अलगा-अलगा
चीं-चीं, चुन-चुन करैत
आ ओकर मायकेँ
ओकरा मुँहमे
अन्नक दाना दैत

कतेक लगन आ सिनेहसँ
बगरा बनेने छल खोंता
देने छल ओहिमे अंडा
आ बसेने छल अपन परिवार
अपने भूखल रहलाक बादो
भरैत छल अपन बच्चाक पेट

आ ओकरे सभक चिंता
आ सुरक्षामे
बीतैत छल
ओकर दिन
ओकर राति

बगराक खोंता
कोना उजड़ल
आन्ही-बिहाड़िमे
या उपद्रवी जीवक हाथेँ
हमरा नहि पता
हमरा तऽ एतबे पता अछि
जे काल्हि ओकर नेनाक
जन्मभूमि छल
ओ आइ ओकरा लेल
श्मशान बनल अछि

जँ बगरा मनुख रहितय
तऽ अपना आँखिक नोर
ककरो देखा सकैत छल
अपना हृदयक वेदना
ककरो सुना सकैत छल
ओहो तऽ एकटा माइये छी
अपना संतान लेल
जे राग-अनुराग
एकटा मानवी देहमे
होइत अछि
ओ अन्यो जीवमे
ओहिना रहैत अछि
ने एक रत्ती कम

ने एक रत्ती बेसी

मुदा मनुख नहि हेबाक कारणेँ
बगराक नोर आ ओकर वेदना
ओकरे धरि सीमित रहत
एहिना जहिना एखन अछि!

ब्राह्मण भोजन

आइ तिला-संक्रांति छी
माय कयने हेतीह
सभ सरंजाम
ब्राह्मण भोजनक
(माफ करब
हम ब्राह्मण, क्षत्रिय
वैश्य शूद्रक चक्करमे
नहि पड़य चाहैत छी)
हम मनुष्य आ मनुष्यते धरि
रहय चाहैत छी
ओना हमरा रहला
आ नहि रहलासँ
की हैत
हमरा तऽ बाँटल जा रहल अछि
राजनीतिक दस्तावेजमे
अहाँ ब्राह्मण
अहाँ क्षत्रिय
अहाँ वैश्य
अहाँ शूद्र
मारल जा रहल अछि
हमरा माथ पर मोहर
जातिगत जनगणनाक
जकरा चाहियोक मेटायब
हमरासँ सम्भव नहि

हँ, से जे कहैत छलहुँ

से ई की माय आइ
ब्राह्मण भोजनक व्यवस्थामे
लागल हेतीह
ज्ञातव्य हो कि
माय सेहो अपनाकेँ
ब्राह्मणीये मानैत छथि
आ निर्वहन कऽ रहल छथि
नानाक देलहा
सभ संस्कारकेँ
मैंयाँक घरक
सभ रीति-नीतिकेँ
ई मायक मजबूरी
आ स्वेच्छा सेहो छी
जकरा धर्म मानि
ओ चलि रहल छथि
ओहि पथ पर

आइ की
सालो भरिक पाबनि-तिहारमे
ब्राह्मण भोजनक परम्परा
रहल अछि
हमरा सभक गाम-घरमे
पहिल अन्न लोक
ब्राह्मणकेँ खुअबैत अछि
तहन अपने खाइत अछि
एना कऽ कऽ
लोक मनैत अछि
ओ ईश्वरक आराधना केलक
यथाशक्ति हुनका भोग लगेलक

हम मायक संस्कारमे
पलल-बढ़ल
गाम-घरसँ दूर
कतयसँ आनू ब्राह्मण
आ कोना कराबू
ब्राह्मण-भोजन
जखन कि
पाबनि-तिहार तऽ एतहु
ओहिना होइत अछि
जहिना कि गाम-घरमे

ओना सत पूछी तऽ
हमरा अपना आपकेँ
ब्राह्मण कहबासँ डर लगैए
होइए कोनो वैश्य
क्षत्रिय या शूद्रे
जातिगत द्वेषक
वशमे आबि
हमर हत्या नहि कऽ दिय
आ ई सम्भव
युग-युगसँ
जे दलित-दमित अछि
ओकरा हृदयमे
बदलाक भाव एनाइ
कोनो अप्रत्याशितो तऽ नहि

एकटा आत्मग्लानि
सेहो रोकैय हमरा
अपना आप केँ
ब्राह्मण कहै सँ

एक्कैसम सदीक
पल्लवित-पुष्पित देशमे
अपना-आपकेँ
कोनो जातिगत खेमामे
ठाढ़ करब
हमरा सर्वथा अनुचित
सेहो लगैए

तेँ ने
हम अपनाकेँ
ब्राह्मण कहैत छी
ने किनकोसँ
जातिक मादे पुछैत छी
तहन पाबनि-तिहारमे
या अनदिनो
छीटि अबैत छी
छत पर
अन्नक दाना
जकरा चीड़ै-चुनमुनीक हेंज
बीछि-बीछि खा लइए
आ एहि तरहेँ
भऽ जाइए
हमर पाबनि-तिहार
हमर ब्राह्मण भोजन!

छुतहर पर बज्रो नै खसै छै

मैंयाँ कहथिन हरदम
—बुझलहिन एकटा बात दाइ
'छुतहर पर बज्रो नहि खसै छै
आ ई छुतहर
कियो आन नहि
अपने घरक अपवित्र
निष्कासित घैलचीसँ
घैल होइत छल
जे काल्हि तक
घैलचीक शान होइत छल
लोकक प्राण होइत छल
से बड़ निर्दयतासँ
निष्कासित कऽ देल जाइत छल
घर-परिवारसँ दूर
चनवा-फरबा
बाड़ी-झाड़ीमे कतहु
आब आन्ही-बिहाड़ि
पानि-पाथरमे
विनष्टे होयब
जकर नियति
मानल जाइत छल

ई छुतहर
आब नहि बँचल शेष
घैलचीक अस्तित्वे जखन
समाप्त भऽ गेल

तऽ कोन धरोहर
कोन छुतहर
सभटा एके दाबिये
लाड़ल-चारल
इनार भत्थन कऽ देल गेल
पोखरि सुखा गेल
आब एके नल-जल योजनासँ
अबैत अछि
सरकारी पानि
धरि मैंयाँक धमनीमे
जे बहैत छनि
अभिजात्य रक्त
ओ मानैक लेल
तैयारे नहि अछि एखनो
की ई वर्ग विभाजनक
जे रेखा खीचने छलनि
हुनक पूर्वजक पूर्वज
ओकर आब समय
नहि रहल
समय अछि
हाथसँ हाथ मिलेबाक
संगे-संग चलबाक।

मनुखक बस्तीमे भेड़िया

कहू जे सपरतीब
मनुखक बस्तीमे भेड़िया
कोना रहि रहल अछि
कोना आयल ओ
जंगली जानवर, आदमखोर
मनुखक बीच
आ एतय रहिकऽ
एतहुके लोकक संग
चोर-नुकैया
खेलि रहल अछि
ओकर बसल-बसाओल घर
उजाड़ि रहल अछि

ई जे कहब
की ई नया बात छी
से नहि छी
एहिसँ पहिनहुँ
एहेन तरहक
अघटित घटना
भेल अछि पूर्वमे
जे आदमखोर भेड़िया
मनुखक बीच आबि
मनुखक अवघात कयलक
ओकर मान-मर्यादा
मर्दन कयलक

धरि कतेक दिन
ई चोर-नुकैया चलत
एक ने एक दिन
भेड़िया अवश्य
पकड़ल जायत
आ मारि देल जायत
कोनो चौक-चौराहा
कोनो मोड़ पर
भेड़ियाक भागमे
अकाले मृत्यु तय छैक
से भऽ कऽ रहत
आइ भलेहि
मनुखक बीच रहितहुँ
मनुखक करय अवघात
समय ककरो छोड़लकैक अछि
जे ओकरा छोड़तैक!

आपसी सौहार्द्रताक बेन

पहिने गाममे
बेन-तिहारक
बड़ चलनसारि छल
छठि हो कि चौड़चन
होली हो कि दिवाली
लोक असगर
नहि खाइत छल किछु
एहि घरक खीर-पूड़ी
ओहि घर
ओहि घरक खीर-पूड़ी
एहि घर

पाबनि-तिहार तऽ
पाबनिये-तिहार छल
जे अनदिनों लोक
लोकसँ बाछिकऽ
कहाँ किछु खाइत छल
आम फरौ कि लताम
केरा फरौ कि कटहर
लोककेँ लोक
बिना बेन देने
कहाँ खाइत छल अपने
आ लोकक मोनो
लगले रहैत छल
लोकक बाड़ी-झारीक
आम-कटहर, नेबो-लताम पर

बेटी पुतुहुक बियाह द्विरागम मे
तऽ बेन-तिहार
स्वाभाविके छल
जे बिदागिरियो मे
वेनक चलनसारि
कम नहि छल पहिने
चंगेरा भरि-भरि
पुरी पुरिकिया टिकरी
साँठैत छल लोक
बेटी पुतोहु केँ
आ से परसल जाइत छल
भरि टोल
फल्लाक बेटीक सासु
कतेक लुरिगर
चिल्लांक पुतोहुक माय
कतेक वियापक
से सभ देखल जाइत छल
वेन-तिहार मे
पुरी आ पुरूकियाक गढ़ैन
ओकर स्वाद मे

पहिने आगियो अबैत छल बेनमे
दोसरेक अँगनासँ
जकरा लोक जोगाकऽ रखैत छल
कएक-कएक दिन तक
अन्तर ई छल
जे ओ आगि घर जरेबाक लेल नहि
पेटक आगि मिझेबाक लेल
होइत छल।

सूप दुसलनि चालनिकेँ

कहलनि सूप
गे बहिन चालनि
तू की बजबें
तुहूँ कोनो करमक छें
तोरामे तऽ बहत्तरि गो छेद छौ
वेचारी चालनि
अवाके रहि गेलीह
कहू जे सपरतिभ
एहि सूपक
जकरामे अपने सहस्त्रो छेद छै
से हमरा दूसैए

ई समयो किछु
एहने अछि
जे सभसँ पैघ चोर
ओ अपनाकेँ साधु कहैए
जे सभसँ पैघ विश्वासघाती
से अपनाकेँ
विश्वासक प्रतिमूर्ति कहैए
जे सभसँ पैघ लालची
से अपनाकेँ त्यागी कहैए
जकरा हृदयमे
मनुखो लेल
नहि छैक दया
ओ दोसरकेँ क्रूर कहैए
जकरा सभ ठाम

दागे-दाग छैक लागल
ओ अपनाकेँ
सभसँ पैघ
पाक-साफ कहैए

कहबा आ दुसबामे
किछु लगैत छै लोककेँ
मुँह छैक संगमे
किछुसँ किछु
बजैत रहैए
सार्थक आ निरर्थक
एकर चिंता
नहि काल्हि छलै ओकरा
नहि आइ छैक
पीठ थपथपेनिहार
सभ ठाम रहैए
आ रहबे करत
मनोरंजन मात्र
ओकर उद्देश्य
जकर पूर्ति
भइये जाइत छैक
आर की चाही ओकरा!

सपना

जँ हमरासँ
हमर सपना पूछब
तऽ हम अतीतसँ
शुरू करब
ओना सामान्यतया लोक
भविष्यसँ शुरू करैत अछि
अपन सपनाक रूप-रेखा
मुदा जँ हम अतीतकेँ
अपना वर्तमानसँ
बाहर कऽ देब
तऽ भविष्यक रूप-रेखा
नहियें स्पष्ट हैत
जे वर्तमानो
अर्थहीने लागत हमरा

ओहि समयमे
जखन लोक सपना देखैए
नीक वस्त्रक
नीक भोजनक
नीक आवासक
हम सपना देखैत रही
नीक किताबक
नीक स्कूलक
नीक शिक्षा-दीक्षाक
जाहिमे एतेक संकट रहय
की सपना

कोशीक आवेगमे
समाहिते सन बुझाय

हमर सपना
अपना बाड़ी महक
पोड़ोक लत्ती सन
डगमगा-डगमगा खसय
एम्हर-ओम्हर
जकरा आगूक यात्रा लेल
कोनो मचान
नहि रहय कतहु
कोनो टाट-फरक
नहि रहय केम्हरो
भविष्य असुरक्षित
वर्तमान अनिश्चित
एकटा पैघ राति
जे नहि बितबाक लेल
ठाढ़ रहय माथ पर

जँ हमरासँ
हमर सपना पूछब
तऽ हम एखनो
यैह कहब
हमर सपनाक रूप-रेखा
नहि बदलल अछि
नीक मकान
नीक गाड़ी
नीक वस्त्र
ओजनगर गहना
हमरा आकर्षित

नहि करैए एखनहुँ

हम ओतहि छी ठाढ़
जतय रही
पैंतीस साल पहिने
नीक किताब
नीक कलम
मोटगर डाइरीक
सपना लेने आँखिमे
आ उम्मीद करैत छी
जीवनक अन्तिम दिन धरि
ई सपना बनल रहत!

सोंगर

पहिने खढ़क घर रहय गाममे
लगभग-लगभग सभक
ईटा-पाथरक मकान तऽ
नहियेक हिसाबे रहय
आ ई खढ़क घर होइक
बड़ कमजोर
एतेक कमजोर
जे एको रत्ती भरिगर
आन्ही-बिहाड़ि उठय तऽ
कखनो एम्हरसँ झूकय
कखनो ओम्हरसँ
सभ दिन सभ बेर
नवका घर बनायब
सम्भव नहि छल लोकसँ
तेँ सोंगर लगाय
ठाढ़ कयल जाइत छल
पुरने घर

संरक्षक हिसाबे
सोंगरक महत्व
बड़ पैघ छल पहिने
लोक दू-चारिटा बाँस
दू-चारिटा खुट्टा
हरदम रखितहि छल सरियाकऽ
बेर-बेगरताक लेल
मौसम-चक्र तऽ

बदलितहि रहैत छल
समय-समय पर
कखन कोन दिन
सोंगरक काज पड़ि जायत
से कियो नहि जनैत छल

आब घर तऽ
पक्का मकान अछि
नहि छैक ओकरा
सोंगरक बेगरता
धरि लोके भऽ गेल कच्चा
डेग-डेग पर ओकरा
सोंगरक खगता
होइत छैक
जामे सोंगर नहि लगतैक
ओ ठाढ़े नहि हैत
लटपटा-लटपटाकऽ खसत
तेँ बेर-बेगरता लेल
आपात व्यवस्था लेल
लोक दू-चारिटा
सारिलक खुट्टा
रखैए सोंगर लेल
की पता कखन
कोन दिन
काज पड़ि जाइक!

निर्दलीय

जँ राजनीतिमे
निर्दलीय छी
तऽ बड़ आगत-स्वागत हैत
जकरे पक्षमे ठाढ़ हैब
ओकरे पलड़ा
भऽ जेतै भारी
तेँ दुलार-मलार
जते लऽ सकी
जते हुअ
सबटा कम्मे बुझायत

धरि जँ समाजमे छी
आ नहि छी शामिल
कोनो दलमे
तऽ महत्व तऽ दूरक बात
पुछबो नहि करत कियो
चाहो-पानक लेल
सभ कन्नी काटत
अहाँकेँ देखितहिं
अहाँ अनाथ-उपेक्षित
अनुभव करैत रहब
अपनाकेँ
ताहिसँ ककरो
कोनो फर्क नहि पड़तैक

ई समय अछि

अहाँ कोनो ने कोनो
दलमे शामिल रहू
हँ मे हँ मिलबैत रहू
सत् या झूठसँ
किछु लेना देना नहि
मात्र मूड़ी हिलबैत रहू
सरकार जँ
बाथरूम जेथिन
तऽ अहाँ बाथरूमक गेट पर
तौलिया लऽ कऽ
ठाढ़ रहू
घाम चूबनि अगर
सरकारक माथसँ
तऽ रूमाल रहय
अहाँक हाथमे
पियास लगनि सरकारकेँ
तऽ पानि पियबियनि अहाँ!

दाग

सभ दाग
नीके नहि होइत छैक
किछु दाग तऽ
बेदाग जीवनकेँ
दागदार बनाकऽ
छोड़ैत छैक
तहन व्यक्ति
सामाजिक-आर्थिक आ राजनीतिक
तीनू दृष्टिएँ
भऽ जाइत अछि
अवांछित लोक
जकरासँ
दागहीन लोक
कन्नी काटैए
भागल घुरैए
की पता कखन
'सत संगे गुणाः दोषाः भवन्ति'
परिवर्तित भऽ जाय
ई सूत्र

ओना सहज
नहि अछि
काजरक कोठलीमे
बेदाग बँचब
दाग लगबाक खतरा
ओतय बनले रहैत छैक हरदम

ओतय दायाँ-बायाँ
आगू-पाछू
सभ जगह
एकटा आतप संकट
माथ पर ठाढ़ रहैत छैक
अपन ग्रास बनेबाक लेल

व्यक्ति जँ सूझ-बूझसँ
काज नहि लैक
अपन सए प्रतिशत
अपना कार्य-व्यवहार पर
नहि दौक
तऽ ब्रह्मो जँ आबिकऽ
ठाढ़ होथि
पुनर्निर्माणक योजना बनबथि
तऽ तैयो दागहीन
नहि राखि सकैत छथि
अपन कृतिकेँ
आ एक बेर
जँ दाग लागि गेल
तऽ हजारो क्विंटल निरमा
सफेदी नहि दऽ सकैए
दागहीन नहि बना सकैए!

भाषा

माय कहैत छलीह
'यैह मुँह पान खुअबैत छैक
आ यैह मुँह पनही'
ताहि दिनमे
नहि बुझिये
एकर अर्थ
पान आ पनहीक
बीचक भेद
एतेक धरि बुझी अवश्य
की जरूर पान आ पनहीक बीच
होइत हैत
जमीन-आसमानक अन्तर
जकर उल्लेख
माय एहि फकरामे
करैत छथि

आब जखन कि
बुझय लगलहुँ
पान आ पनहीक भेद
दुनूक बीच अन्तर
तऽ होइत अछि
यथार्थे कहैत छलीह माय
भाषा जँ सम्मानित हो
तऽ सम्मान पबैए लोक
भाषा जँ अभद्र हो
तऽ अपमानित होइए लोक

किछु लोकक मुँहसँ
देखैत छी
अगबे फूले-फूल झड़ैए
चम्पा, चमेली, बेली सन फूल
जे वातावरणकेँ
एकदम मनमोहक
बना दैत अछि
जकर सुगन्धि
मन-प्राणकेँ छुबैत अछि

मुदा किछु लोकक मुँहसँ
अगबे बगूरक
काँट झड़ैए
जकरा कारणेँ
ओ तऽ समाजमे
अपमानित होइतहिं अछि
दोसरोकेँ
जाहि जगह गड़ैए
खून आ गुद्दी
लेनहि निकलैए।

अमर्यादित भाषा

जतेक प्रयास करैत छी
चुप्प रहबाक
ओतेक भऽ नहि पबैए
कही जे मुँहमे आँगुर दऽ
किछु अमर्यादित भाषा
बजबाक लेल
विवश करैत अछि

होइत अछि
कोनो वैरागी पुरुष सन
बँचिकऽ निकलि जाइ
एहि योग-क्षेम सभसँ
कोन काज अछि
ककरो गारि-बात सुनब
ककरो गारि-बात देब
धरि भऽ नहि पबैए से
संसारमे रहिकऽ
सांसारिक मायासँ
बँचिकऽ बाहर निकलब
बहुत कठिन अछि

आ सभसँ दुःखद स्थिति
तऽ तखन बुझना जाइए
जखन जकरा कान्ह पर
समाजकेँ मर्यादित करबाक
सभसँ बेसी भार रहैए

वैह अमर्यादित भऽ
सम्पूर्ण समाजक
सभ्य-सुसंस्कृत जलमे
काँकड़ फेकैए
शांत वातावरणकेँ
अशांत करैए
किछु व्यक्तिगत
किछु जातिगत
किछु वर्गगत
ईर्ष्याक कारणेँ !

भाषाक सम्बन्ध

माय कहैत छथि
'कामिनी सुनै छी
तू कविता लिखै छीही
(ज्ञातव्य हो जे माय निरक्षर छथि)
से कवितामे की लिखै छीही?'
सासुर गेलौं तऽ
सासुओक यैह जिज्ञासा
'कनियाँ सुनै छी
अहाँ कविता लिखै छी
से कवितामे की लिखै छी'

जहिना माय निरक्षर
तहिना सासुओ
कही जे हुनका सभक उमेरक
लगभग निनानबे प्रतिशत
सभ स्त्री निरक्षरे
ताहि दिनमे
स्त्रीक स्थिति
सामान्योसँ अति सामान्य छल
जकर जीवनक
एकमात्र उद्देश्य
घर सम्हारब
आ प्रजनन करब छल
एहिसँ बेसी
सौभाग्येसँ भेटै छल ककरो
या प्रगतिशील परिवार

सोचै छल बेटीक लेल

निरक्षर माय
आ निरक्षर सासुक
एकमात्र साक्षर
बेटी आ पुतोहु हम
जीवनक तेसर पड़ावमे
साक्षर तऽ नहि कऽ सकलहुँ हम
हुनका दुनूकेँ
धरि कविता पढ़िकऽ
अवश्य सुनेलहुँ
सुखद आ संतोषप्रद
बात एतबहि
जे दुनू गोटे कविता
जतबे मनोयोगसँ सुनलीह
ओतबे विशद अर्थो बुझलीह

एकर एकमात्र कारण छल भाषा
अपन भाषा
जकरा ओ पढ़ैक सामर्थ्य
नहियो रहने
सुनियेकऽ अर्थ बुझि गेलीह

ई जे भाषाक सम्बन्ध
होइत अछि ने
ओ रक्ते-सम्बन्ध सन प्रगाढ़
जकरासँ परिचय
आ जकरा प्राप्त करबाक लेल
कोनो तेसरक बेगरता
नहि पड़ैत छैक!

बुढ़बा मरबो नहि करैत छैक

दरिया दाक सन
दू-दू टा बेटाक बाप
बड़का बाबू
अस्सी पार
बेटी लग आबिकऽ
रहैत छथि
ओ तऽ सुकूर मानू
जे बेटी आश्रय देलकनि
नहि तऽ एहि अवस्थामे
कतय जइतथि
की करितथि
एतेक राजपाट
सखा-संतान
सभकेँ छोड़ि वृद्धाश्रम
नहि-नहि, सोचितहुँ डर लगैत छनि
एहिसँ नीक तऽ
भगवान उठा लौथ
एहि मृत्यु-भुवनसँ
मृत्युक माध्यमे

बड़का बाबू
बिछौन पर पड़ल-पड़ल
गुनधुन-गुनधुन
करैत रहैत छथि
बेटी लग आबिकऽ
रहैत छथि

दुःख एहि बातक नहि छनि
दुःख तऽ एकर छनि
जे जाहि बेटा लेल
एतेक अरजलहुँ
से नहि अपन भेल
एहि चारिम अवस्थामे
कियो संग नहि दइए
दुःख नहि बुझैए
सभक मुँहमे
एकहि बात
बुढ़बा मरबो नहि करैत छैक
अरे मरनाइयो की
अपना हाथमे छैक
से जँ रहितैक
तऽ कहिया ने
मरि गेल रहितय ओ
जखन जीवनमे
किछु बँचले नहि छैक
रोगक अलावे
तऽ जीने की
आ मरने की

मुदा अपना हाथमे तऽ
किछु नहि छैक
धिया-पुताक उपेक्षाक सिवा
जाहि जमीन-जायदादकेँ
अरजैत-अरजैत
जाहि सम्पत्तिकेँ
सैंतैत-सैंतैत
हाथ खिया गेलनि

भरि हाथ
ओहि सम्पत्तिमेसँ
बेटियोकेँ नहि देल भेलनि
आ करैत गेलाह
बेटाक नाम
से बेटा आइ हुनका
सूप महक भट्टा बना
गुड़का रहल छनि
एम्हरसँ ओम्हर!

ओहो तऽ मनुखे छी

ए.सी.बला रूममे
रहैत-रहैत
जखन मोन उबिया गेलनि
हमर पड़ोसिनकेँ
तऽ बाहर निकलली
बाहरक हवा खाइ लेल

धरि बाहरक हवा
एतेक ने गर्म छल
जे दुइए-चारि बेर
एम्हर-ओम्हर घुमैत
बेचारी बेहाल भऽ गेलीह
आ बेचैनीमे बाजय लगलीह
'बाप रे, इतना गर्मी में
वो अन्दर ही ठीक है ए.सी. में
बिना ए.सी. का यहाँ रहना
बहुत मुश्किल है'
आ झटकारिक
पुनः भगलीह घर

हमरा हँसी लागल
हुनका बात पर
आ दुःखो भेल
हिनका घरमे ए.सी. छनि
तऽ छाहरियोमे छाहरि तकैत छथि
जे एहियो प्रचंड रौदमे

दिन भरि
मकान बनबैत अछि
रोड पर काज करैत अछि
खेतमे हर-बड़द जकाँ
जोतल रहैत अछि
नहि जानि कतेको तरहक
एहेन काज करैत अछि
जतय सूर्यसँ
सीधा सम्पर्क अछि ओकर
आ 'आह' तक
नहि निकालैत अछि
मुँहसँ
ओहो तऽ मनुखे छी!

नतमस्तक

गरीबक घरमे
पूजाक घर नहि होइत अछि
होइत अछि
पूजाक रैक
पूजाक चौकी
पूजाक देबाल
जाहि पर ईष्ट देव
पूजित होइत छथि
घरक सुख-दुख
बँटैत छथि

हमरो घरमे
एकटा पूजाक रैक अछि
जाहि पर
शंकर-पार्वतीसँ लऽ कऽ
लक्ष्मी-गणेश तक
विराजित छथि
श्रद्धा-भावसँ
पूजित छथि
ओहिये रैकक कोनमे
स्थापित छलाह
महाबली हनुमान
पकिया माटिक हनुमान
जिनकर नाक एकदिन
अनचोकेमे
मुँहे भरे खसलासँ

टूटि गेल
आ हनुमानजी भऽ गेलाह
नाकहीन

आ एहि नाकहीन
हनुमानजीकेँ हम नाक
सभ दिन सिन्दूरसँ
बनबैत छलहुँ
खण्डित मूर्तिकेँ
साबूत करैत छलहुँ
मुदा पूजा होइतहिं
पानि पड़ितहिं
हनुमानजीक नाक
सभ दिन बहि जाइत छल
आ नाकहीन होइतहिं
लगैत छल हनुमानजी
सभ दिन उलहन दैत छथि
बेर-बेर कहैत छथि
'तोरे ओजहसँ
हम भऽ गेलहुँ खण्डित
नाकहीन'

मोन विचलित होमय लगैत छल
आत्मग्लानिसँ भरि जाइत छल
एक दिन अचानक
हम रैकक कोनसँ
हनुमानजीकेँ उठेलहुँ
आ गंगाक धारामे
विसर्जित कऽ अयलहुँ
आ मुक्त भऽ गेलहुँ

खंडित मूर्तिक उलहन-उपरागसँ

मुदा जखन-जखन जाइत छी
पूजाक रैक लग
पूजा करैक लेल
धूप-दीप देखबैक लेल
माथ अपने आप
झुकि जाइत अछि
ओहि जगह पर
जतय हनुमानजी
स्थापित छलाह
श्रद्धा भावसँ पूजित छलाह
मोन कहैत अछि
पूजा माटिक मूर्तिक नहि
पूजा मनक श्रद्धा
विश्वासक होइत अछि
जकरा विसर्जित
नहि कयल जा सकैत अछि
गंगाक कोनो धारामे किन्नहुँ!

चम्बल घाटीक लुटेरा

नेना रही तऽ
गाममे रही
आ गाममे ताहि दिन
नाटक बड़ होइक
कही जे सभ पर्व-त्योहारमे नाटक
खास कऽ कऽ
दुर्गा पूजा, काली पूजा, छठि आदिमे
जकर रिहर्सल
महिनो-महिना धरि चलय
एकर मुख्य कारण इहो रहय
की मनोरंजनक दोसर साधनो
नहि रहय ताहि दिन गाममे
लोक एहिये नाटकक माध्यमे
मनोरंजनो करय
आ सामाजिक बदलावक आसो
जनजागृति आ सामाजिक विडम्बना पर
कही जे पैघ प्रहार करय नाटक

एहि सभ नाटकमे
एकटा खासम-खास नाटक रहय
चम्बल घाटीक लुटेरा
जे सालमे
एक-आध बेर तऽ अवश्ये
मंचित होइक मंच पर
जकरा लोक खूब मनोयोगसँ देखय
कोना डाकू-लुटेरा बनि

सभटा छीनि-झोड़िकऽ
लऽ जाइ निरीह लोकसँ
ओ करिया कपड़ा पहिरने
करिया पट्टी माथ पर बन्हने
आ हाथमे पिस्तौल लेने आबय
आ सभटा लूटि-बटोरि
तहस-नहसकऽ
चलि जाइ फेर
पहाड़क खोहमे
या नदीक ओहि पार
जतयसँ ओकरा पकड़ब
बहुत कठिन रहैत छल
पुलिसोक लेल

ई नाटक जतबे
मनोरंजक होइक
ततबे त्रासदीपूर्ण सेहो
बंदूक भलेहि खालिये होइक
मुदा बाजय भटाभट खूब
लोक डरि-सहमि जाइ
लागैक वास्तवमे
लूटपाट मचा रहल अछि
चम्बल घाटीक
इनामी लुटेरा
आ गाहे-बगाहे
एहेन तरहक लूटपाटक समाचार
अबितहि रहैत छल कानमे
एहेन तरहक लूटपाट
मचितहि रहैत छल देशमे

आब एहि डाकू सभक नाम
तऽ नहि सुनैत छी
आब जे नवका डाकू सभ
जनमल अछि
ओ नदीक ओहि पार
पहाड़क खोहमे नहि
विधान सभा
विधान परिषद
बड़का-बड़का महलमे रहैत अछि
जे तेनाकऽ लूटपाट करैत अछि
जे बड़का-बड़का जाँच ब्यूरोकेँ
पसेना छुटि जाइत छैक
सालो लागि जाइत छैक
ओ तैयो नहि पकड़ाइत छैक
आ सरकारक विवशता ई कही
जे ओकरा पर इनामो नहि राखि सकैत अछि
सरकार जे ओकरेसँ चलैत छैक!

अद्‌भुत छटा

अद्‌भुत छटा होइत अछि
जखन आम मँजरैत अछि
महुआ फड़ैत अछि
बड़हरमे फूल अबैत अछि
कटहर मोछियाइत अछि
मुनिगा फुलाइत अछि
बेली-चमेली-चम्पा
कनैल-अड़हुल संग
बाधे-बोने, कोनटे-फरके
बाड़िये-झाड़िये
विहुँसैत अछि
खिलखिलाइत अछि
रंग-रभस करैत अछि

अद्‌भुत छटा होइत अछि
जखन पाँती लागल
गहुँमक सीस
झुम्मरि खेलाइत अछि
एक-दोसराक हाथ
पकड़ने खेतमे
मटर-खेसारी-तीसी
बादामक संग
करैत अछि एकांती
बड़-पीपड़-पाकड़ि
अपन पुरना परिधान त्यागि
नव वस्त्रसँ परिवेष्टित भऽ

पुरबा-पछबा बसात संग
स्नेह-सम्बन्ध जोड़ैत
हँसैत अछि
गबैत अछि

अद्‌भुत छटा होइत अछि
जखन वातावरणमे
घुलि जाइत अछि गुलाल
लाल-पीयर-हरियर
लोकक मन भऽ जाइत अछि वासंती
लाल-पीयर-हरियर
आ हृदयसँ फुटि पड़ैत अछि भाव
'फागुनमे रसिया बजाबे बँसिया फागुनमे'
सभ चर-अचर
एक सुरमे
गाबय लगैत अछि फागु
'किनका के भीजल
पीयर-पितंबर
किनका के भीजल
कुसुम साड़ी फागुनमे'

अद्‌भुत छटा होइत अछि
वास्तवमे अद्‌भुत छटा होइत अछि!

आवश्यकता आ विलासिता

आइ बहुत दिनक बाद
टमाटर दऽ कऽ
तरकारी बनेलहुँ
कही जे तहियेसँ
नहि बनौने रही
टमाटरवला तरकारी
जहियासँ टमाटर
महग भेल छल
सए दू सएक पार

हमरा एहेन सामान्य वर्गक लोक
जँ भात-रोटी नहि खाओत
तऽ नहि बनतै
तीमन-तरकारीमे
सामान्य भावक तरकारी
जँ नहि कीनत
तऽ नहि बनतै
दवाइ-दौड़ी नहि करत
से नहि बनतै
स्कूल-कॉलेजक फीस
नहि भरत
से नहि बनतै
पेपर-पत्रिका नहि कीनत
सेहो नहि बनतै
गाम-घर
पाबनि-तिहार

लोकरीति-नीति
जाहि विधि हो
पुरेनाइये छैक

तहन टमाटर
सस्ता हौ
कि महग
कोन अन्तर पड़ैत छैक
जेहने खयने
तेहने नहि खयने
सामान्य वर्गक लोक
स्वास्थ्यकेँ दृष्टिमे राखि
कहाँ खा पबैत अछि
कोनो वस्तु
ओ तऽ भूख मेटबैक लेल खाइए
आ जे उच्च वर्गक लेल
आवश्यक आवश्यकतामे
शामिल रहैत अछि
ओ मध्यम वर्गक लेल
विलासिता छी!

दाता आ भोक्ता

पाँच फुटक जवान सूरज
देखबा-सुनबामे
जेहने सूर्य सन देदीप्यमान
तेहने काज करैमे फूर्तिगर
एक बेर जे हाथमे झाड़ू पकड़ैए
से काज समाप्त भेले पर छोड़ैए
चमकेने रहैए एपार्टमेन्टक परिसर
एहि कातसँ ओहि कात धरि
ओम्हर सूर्यक लाली दइए
आ एम्हर सूरज हाजिर
अपन काम-काजक लेल
सूरज समर्पित अछि
भक्त आ भगवान सन
एकाग्रता लेने

धरि एकटा कमी छैक सूरजमे
ओ निम्न वर्गसँ अबैए
तेँ पाइ-कौड़ीक अभाव
लगले रहैत छैक जीवनमे
पैतृक सम्पत्तिक नाम पर
एकटा झोपड़ी सन घर
आ हाथ महक झाड़ू छैक
ओकरा लग
जकरे सहारे जीवन
चलि रहलैए आइ धरि
तेँ बेर-बेगरता पड़ला पर

लोक लग हाथ
ओकरा पसारहि पड़ैत छैक
किछु ने किछु माँगहि पड़ैत छैक

कखनो राशन-पानिक नाम पर
तऽ कखनो दवाइ-धर्माइ लेल
बेसी काल तऽ ओ
पुरना पेंट-शर्ट
पुरना जुत्ता-चप्पल
पुरना स्वेटर-टोपी
सेहो मँगैत रहैए
आ हर्षक संग हम सभ
ओ सभ सामान
ओकरा देबो करैत छी
कखनो-कखनो तऽ
नवे रहैत अछि सभ किछु
तेयो दऽ दैत छियैक ई सोचि
की हमरा लग तऽ पड़ले रहैए
ओकरा तऽ काज आबि जेतै

सत् कही तऽ
सूरज जखन
मँगैत अछि
तऽ हम अपने लजा जाइत छी
होइए ई जवान-जुआन लड़का
जे बाबू-बवुआन सन लगैए
हमरा लग अभावेक खातिर ने
हाथ पसारैए
नहि तऽ ओकरो लग
ओ सभ सुविधा

होयबाक चाही छल
जे हमरा लग अछि

एतेक धरि तऽ ठीक
धरि सए गुणक रहितहुँ
एकटा जे बड़ पैघ
अवगुण अछि ओकरामे
ओ अछि ओकर
नशाक प्रति आशक्ति
जे सम्पूर्णों सूर्य पर
ग्रहणक कालिमा
पसारने अछि
कनैत-कलपैत कहने रहय
ओकर पिता एक दिन भोरे-भोर
'मैडम, समझाइये न सूरज को आपलोग
रोज रात को दारू पीकर आता है
और पत्नी को पीटता
घर का सामान तोड़ता है
हमलोगों की तो अब सुनता ही नहीं'

सन्न रहि गेलहुँ सुनिकऽ
जे सूरज सामान्यो
जरूरतिक सामान लेल
दोसर लग हाथ पसारैत अछि
ओ खून-पसेनाक गाढ़ कमाइकेँ
एहि तरहें ताड़ी-दारूमे
फूकि अबैत अछि
घरकेँ सम्हारै वाली
घरवाली पर
हाथ उठबैत अछि

सोचऽ पर विवश भ' सकैए
देशक कोनो सजग नागरिक
जँ एहिये तरहेँ सूरज
आ सूरज सन हजारो युवा
मूलभूत आवश्यकताक पूर्ति
करबाक अपेक्षा
विलासितामे कमाइ खर्च करत तऽ
नव पीढ़ी ओकर
कोना स्कूल जायत
कोना पढ़त-लिखत
कोना विकास करत
कोना ओकरा हाथसँ
ई झाड़ू छूटत
आ कोना ओ
देशक सर्वोच्च आसन पर बैसत
जाहि पर ओकर जन्मजात अधिकार बनैत छैक!

पात पर भात

मरल पड़ल छथि
असगरे नुनू काका
कखन मरला
सेहो नहि छैक लोककेँ बुझल
भोर-साँझ
दिन-राति
कखनो तऽ प्राण छुटले हेतनि
धरि निश्चित कहब कठिन
असगरे जे रहैत छलाह

आइ मरलाक बाद
असगर भेलाह
से बात नहि छैक
नुनू काका तऽ
तहिये असगर भऽ गेलाह
जहिया बघाँतवाली काकी
मरि गेलीह
शहरे-शहरे बसल
तीन-तीन टा बेटाक
बाप भेलाक बादो

नुनू काका
सभकेँ गमलखिन
सभकेँ देखलखिन
अन्तमे पकड़ि लेलाह
अपने बनाओल

अपना घरक खाम्ह
जामे पैरुख रहलनि
सिझबैत रहलाह
अपना पेट लेल
एक पाव चाउर
एक मुट्ठी दालि
दूटा अल्लू
पकबैत रहलाह
चारिटा रोटी
हर्षे कि विषादे
जहिया पैरुख खसि पड़लनि
ताहि दिनसँ
भऽ गेलाह पराश्रित
एक कओर भात
एकटा रोटी लेल
किछु दिनसँ
हालात तऽ एहेन बनल छल
जे नुनू काका
जीबैत तऽ छलाह
धरि जीवनक सुगबुगाहटि
नहि देखाइत छल
हुनका मुँह पर

धरि तैयो
कहाँ खोज-पुछारि
कयलकनि कोनो बेटा
फेकैत रहलनि बात
एक-दोसरा पर
मरैसँ पहिने
नुनू काका

नहि तकलाह बाट
कोनो बेटाक
चलि गेलाह
एहि माया-मोहसँ दूर
बहुत दूर

आब तीनू बेटा एतनि
बेरा-बेरी हवाइ जहाजसँ
तीनू शहरसँ
आ नीकसँ सराधो करतनि
जीबैत थारीमे भात
नहि देलकनि तऽ की
मरलाक बाद
पात पर भात अवश्य देतनि
पूड़ी-तरकारीक भोज
सेहो करतनि!

विश्वास

एतय एक आँखिसँ
लोक हँसैत अछि
तऽ दोसर आँखिसँ
लोक कनैत अछि
दुनू आँखिकेँ
हमर आँखि
देखि रहल अछि
आब हँसि पर हँसी
या नोर पर द्रवित होइ
ऊहापोहक स्थिति
बुझना जाइत अछि हमरा

ओना हम जनैत छी
हृदयहीन लोक
हँसिये सकैत अछि
कनबाक लेल तऽ
हृदय चाही
जे की सभक लग
नहि अछि
तखन हँसबाक लेल
हृदयक कोनो बेगरता नहि
लोक तऽ लोककेँ
खसितो देखि
हँसय लगैत अछि
जखन कि ई कोनो
तय नहि रहैत अछि

जे आइ दोसर खसल
तऽ खसल
ओ नहि खसत काल्हि
खसब एकटा प्रक्रिया छी
जे निरंतरता बनौने रहैए
हर घड़ी

लोकक एतय
एतेक रूप अछि
जे विश्वास करब
अति कठिने नहि
अति दुष्करो अछि
जामे एक रूपकेँ
अहाँ चिन्हब-जानब
तामे ओ दोसर रूप
बदलि लैत अछि
जामे दोसर रूपसँ
परिचित होयब
तामे तेसर रूप धारण कऽ लैत अछि
ई प्रक्रिया चलिते रहैए निरन्तर
माय कहैत छथि
आब ओ युग नहि रहलै
जे लोक पर लोक
विश्वास करत
धरि बिन विश्वासे
युग कोना चलत
ककरा लऽ कऽ चलत
सवाल आबिकऽ
टिकैत अछि
एही बात पर!

शपथ

हम गीता पर हाथ राखिकऽ
शपथ खाइत छी
जे कहब
से झूठे कहब
झूठक अलावा
हम सत् नहि बाजब

धरि हमरा झूठकेँ
सत् मानय पड़त अहाँकेँ
एकर अलावा
कोनो दोसर उपाइ
नहि रहत अहाँ लग

ई बहुविकल्पी प्रश्न नहि
जकर एकसँ अधिक उत्तर
देबाक विकल्प
रहत अहाँ लग
अहाँ लग कोनो
दोसर रास्ता
नहि रहत
जाहि दऽ कऽ
बाहर निकलि सकब अहाँ
अहाँ एहि देशक
राजा नहि
प्रजा छी
जकरा राजाक

सभ नीक-बेजायमे
संग-साथ निमहेबाक
वचनबद्धता कही
या विवशता
रहैत छैक हर घड़ी!

पुरुषक बच्चा

दू-दू टा पुरुषक बच्चा अछि
घरमे
मुदा कोनो काम-काजक नहि
एक बोतल पानियो
भरिकऽ पीताह
सेहो दिक्कत लगैत छनि
रोटी की बेलता
आटा की सनता
साग-सब्जी की बनेता-सोनेता
नहेता से गंजी
की धोताह
नहि धोताह
बेड पर सुतताह
धरि बेड नहि सरियेताह
देह पोछताह
सेहो तीतल तौलिया
बेडे पर रखताह
पानिये लागल कंघी
ड्रेसिंग टेबुल पर छोड़ताह
बेतरतीब छिड़ियायल रहैए घरमे
कोनो सामान
हुनका सभकेँ
कोनो मतलब नहि
पूजा-पाठ तऽ
दूरक बात
एकटा अगरबत्तीयो लेसताह

दीपो जरेताह
सेहो भारी
हँ, बात-बातमे
ऑनलाइनक बात
अवश्य करैत छथि
जेना ऑनलाइनसँ
प्रगट होइत हो
अलाउद्दीनक चिराग
जे सभ इच्छा पूर्ण करबामे सक्षम हो
धरि नहि बुझैत छथिन
ऑनलाइनसँ जँ
सभ इच्छाक पूर्ति होइतय
ऑनलाइनसँ जँ सभ बेगरता
शांत होइतय
तऽ ऑफलाइनक कोन खगता छल
घर-परिवार
प्रेम-व्यवस्था
ई सभ ऑनलाइन
नहि खरीदल जा सकैए
नहि बाजारमे
बेचल जा सकैए

आइ जँ बेटी रहितय
तऽ बुझितय सभटा
भाव-कुभाव
रखितय घरक व्यवस्था बरकरार
मुदा बेटियो सभकेँ
कहाँ होइत छैक
बेटियो तऽ भागवंतेक भागमे
होइत छैक

पुरुषक बच्चा तऽ
सभ दिन
बच्चे रहि जाइत अछि
जे नहि भाव बुझैत अछि
नहि कुभाव
नहि कोनो ढंगक व्यवहार!

सींग

काल्हि हम अबैत रही साँझमे
तऽ बेस नम्हर सींगवला पशु
हमरा सामनेसँ टकरा गेल
परिस्थिति एहेन बनल
जे नहि हम रस्ता बदलि पयलहुँ
आ नहि यात्रा रोकि सकलहुँ
डरे त्रास रहितहुँ
मजबूरीमे
हमरा करय पड़ल
ओकर सामना

ओना सींगवला पशुक प्रति
हमरामे अविश्वासक भाव अछि
स्कुलीये जीवनसँ
जहिया पढ़ने रही
'नदीनाम् नखीनाम् शस्त्रपाणिनाम् शृगिंनाम्' तथा
ओना एकर आगूक पाँतीक
हम समर्थन नहि करैत छी
'विश्वसो नैव कर्त्तव्य
स्त्रीषु राजकुलेषु च'

राज कुल तऽ कहियोसँ
विश्वासक जगह
नहिये रहल
मुदा स्त्री पर अविश्वास
की सोचिकऽ लिखलनि कवि

से नहि कहि
ओना व्यक्तिगत हुनक अनुभव
सेहो भऽ सकैए
या इहो कही
जीवनमे सभ पुरुषकेँ
सभ स्त्रीसँ
प्रेम-विश्वास भेटबे करत
सेहो नहि सम्भव
तहिना सभ स्त्रीकेँ
सभ पुरुषसँ
जीवनमे प्रेम-विश्वास भेटत
सेहो कठिन
विश्वास-अविश्वासक क्रम तऽ
चलिते रहैत छैक जीवनमे

तेँ सींगवला पशुसँ
हमरा बड़ डर लगैए
कही जे प्राण एतबेटाक
भऽ जाइत अछि
महादेव-महादेव करैत-करैत
पार-घाट लगैत छी कहुना

मुदा आइ-काल्हि
एहि सींगवला पशुओसँ बेसी खतरनाक
भऽ गेल अछि सींगवला लोक
जे अनेरे, बिन बाते
ढाही लैत रहैए लोकसँ
आ ई एहेन प्रवृतिक लोक
गाम-घर, हाट-बाजार
सभ जगह भरल रहैए!

लाज

जखन हम रोटी बेलैत रही
तऽ हमरा
किछु खटका सन लागल
लागल किछु काटि रहल अछि
बाँहि पर
भेल चिक्कसक लोभे
चुट्टी कटैत हैत बाँहिकेँ
धरि ई हमरा भ्रम छल
तव पर रोटी दीतहि
नजरि आबि गेल
एकटा मोटका मच्छर
जे हमर खून पीबिकऽ
भिसिंड भेल छल

मोन लोहछि गेल
कहू सपरतिभ
हम आगि लग ठाढ़ भऽ
लोकक पेटक आगि
मिझेबा पर लागल छी
आ ई हमर खून पीबि
अपन पेटक आगि
मिझबै पर लागल अछि
दुनू छी आगिये मिझेबा पर लागल
धरि अन्तर अछि
स्वार्थ आ परमार्थक

कहू! एको रत्ती
नहि गत्तरमे
लाज भेलै
एहि मच्छरकेँ
जँ एहि तरहें दंशक कारणेँ
हम रोकि देबै
एहि हाथकेँ
रोटी बेलवासँ
तऽ चारिटा पेट
आइ उपासले रहि जेबै
चारिटा रोटीक अभावमे

स्वार्थी होयब
प्रत्येक जीव-जंतुक
स्वाभाविक गुण-धर्म
धरि एहनो स्वार्थी होयब
कोनो नीक बात नहि
की ककरो थारीक
रोटी छिनि जाइ!

अपन गाम

ओना तऽ भारतक
सभटा गाम
हमर अपने गाम छी
सभटा प्राकृतिक
सम्पदा आ विपदा
हमर अपने
सुख-दुःख छी
एतहुका सभ प्राणी
हमर अपने
बंधु-बांधवी
एतहुका सभ पाबनि-तिहार
हमर अपने उत्सव
एहि धरतीक
एको बीत जगह पर
जँ बाहरी विपत्ति आओत
तऽ ओहि विपत्तिक निवारणार्थ
हम जान लगा देब

धरि तैयो
जँ अहाँ हमरासँ
ई जानहि चाहैत छी
की ओ कोन गाम छी
जाहिमे हमर
जनम भेल
जे हमर लालन-पालन कयलक
जकर अँगनामे

हम चलनाय-बजनाय सिखलहुँ
जकर दलान-दरबज्जा पर
बैसि-बैसि हम
पढ़नाइ-लिखनाइ सिखलहुँ
जाहि गामक स्कूलमे
हम पहिल बेर
भारतक मानचित्रकेँ चिन्हलहुँ
जतहुका लोकक
स्नेह-सत्कार
हम आजीवन
मोन राखब

तऽ सुनू
ओ गाम छी
हमर अपन गाम जयदेव पट्टी
हम एहि कारणेँ
अपन गामकेँ
अपन कहबासँ
नकारि नहि सकैत छी
जे हम एकटा स्त्री छी
जकर गाम आ घर
विवाहोपरांत बदलि जाइत अछि
पतियेक गाम हुनक गाम
आ पतियेक घर
हुनक घर
अपन मानल जाइए

हम सम्मान करैत छियनि
हुनको आ एहि व्यवस्थाक
धरि ताहि लेल

हम अपन गाम
अपन घर
आ अपन पहिचान
बदलि लेब
ई सम्भव नहि
एहि जीवनमे
आ जीवन तऽ जीवन
जँ काल्हि हम
नहियों रही
तऽ हमर
हार्दिक इच्छा यैह
जे ओहिये माटिमे
मिलि जाइ पुनः
जाहिसँ हम
बाहर भेल रही।

लैंडस्लाइड

दू दिन
दू रातिसँ
भारी बरखा भऽ रहल अछि
गाममे
नदी-नाला
पोखरि-इनार
खत्ता-खुत्ती
सभ भरि गेल
खेत-पथार तऽ सहजहिं
एतेक धरि तऽ ठीक छल
मुदा एकटा बड़ दुःखक बात
बीच घरमे भऽ गेल अछि लैंडस्लाइड
माय तऽ धँसधसाकऽ तर
जाइते-जाइते बचलीह
कही जे भागे छल
हमरा सभक
जे ओ कहुना बाँचि गेलीह
धरतीक ओद्रमे समयबासँ
ताज्जुबक बात तऽ ई
जे ई पहाड़ी नहि
मैदानी इलाकाक घर छी
जतय एहेन तरहक घटना
अप्रत्याशिते कहि सकैत छी

ई वैह घर छी
जाहिमे हमर जन्म भेल

जतय हम चलनाइ-बजनाइ सिखलहुँ
जाहिमे हमर कोबर बनल
जाहिमे हुनकासँ
पहिल बेर
भेंटो भेल छल
किछु हुनको सुनने रही
किछु अपनो कहने रही
एहिये साओन मासमे
पुजने रही
ओही घरमे
नाग-नागिन
दूध-लावासँ
सुनने रही
मधुश्रावणीक कथा
पनपथिया भरि फूल लोढ़ि-लोढ़ि
आ ओहिये घरसँ
कानैत-खिजैत
विदा भेल रही
खोइँछामे दूभि-धान लऽ
अपना घरक लेल
ओना हम कतहु रही
हमर आत्मा जनैत अछि
हमर घर वैह छी
जतय हमर जन्म भेल रहय

से हमर घर आइ
विपत्तिमे पड़ल अछि
विपन्नावस्था देखा रहल अछि सहजहिं
घर बनेनिहार पिता
बहुत पहिने प्रस्थान कऽ गेलाह

घर सम्हारनाहरि मैंयाँ
ताहूसँ पहिने छोड़ि गेलीह
बाँचल छथि चारिम अवस्थामे
कहुनाकऽ टुकदुम करैत माय
हुनकासँ की घर सम्हरत
ओ तऽ अपने सम्हरल सुरक्षित रहथि
हमरा सभक लेल
सैह भागक बात
तहन भय तऽ हृदयमे अछिये
कहिया कोन घड़ी
ई घर कालक गालमे समा जायत
से नहि कहि
आ एकरा संग-संग
मेटा जायत हमरो सुखद स्मृति
से नहि कहि...!

अन्तिम पनसैया

ई जे पनसैया
देखि रहल छी ने
ओ कोनो
आम पनसैया
नहि छी
ई छी पिताक देलहा
अन्तिम पनसैया
जकरा हम
एहि मूजक पौतीमे
सम्हारि रखने छी
आइ छह सालसँ
जहियासँ पिता
विदाह भेलाह
कोनो अन्य लोकक लेल

जहिया-जहिया
ई कार्तिक मास अबैए
मोन पड़ि जाइत छथि पिता
'ओना पिताकेँ
बिसरैत कहाँ छी कहियो'
अपना खेतक
ओ नवका धानक चूड़ा
ताहि पर पाँच सए टाका
—हे लेने जाहिन
कामिनीकेँ दऽ दिहनि
बच्चा सभकेँ

किछु कीनि देतैक’
ई बान्हल छल सनेश
सभ कार्तिक मासक
छठिक परात
भाइ साहब अबैत छलाह
भरल झोरा चूड़ा
आ ताहि पर पाँच सए टाका लेने
मोन गदगद भऽ जाइत छल
बहुतो धानक
चूड़ा खाइत छी
तुलसी फूल, बासमतीसँ लऽ कऽ
चन्दन चूड़ तक
धरि ओहि चूड़ाक
जे स्वाद होइत छल
से अन्य चूड़ाक कहाँ
एकर प्रमुख कारण
इहो छल
जे पिताक स्नेह आ श्रम
ओहि चूड़ाक स्वादकेँ
दोबर कऽ दैत छल

से दैव संयोगे
पिता एही कार्तिक मासमे
एही छठिक परात
चूड़ा आ पाइ पठा
जे खसलाह
से घुरि नहि उठलाह
जीवनमे कहियो
ने डाक्टर बचा सकलनि
ने भाग्य

ने हम दुनू भाइ-बहिन
पिता चलि गेलाह
हमरा सभकेँ छोड़ि
कनैत-कलपैत रहि गेल
परिजन-पुरजन
पिता नहि घुरलाह फेर

हम पिताकेँ तऽ
नहि सुरक्षित
राखि सकलहुँ
जकर दुःख अछि एखनहुँ
धरि पिताक देलहा
ई अन्तिम पनसैया
रखने छी सुरक्षित
एहि मूजक पौतीमे
आ हम वचन दैत छी
धरोहर रूपमे
एकरा हम एहिना राखब अनामति
जामे धरि रहत
हमरामे
एकहुटा साँस बाँचल!